लड़का और भूत

रॉबर्ट डी. सैन

चित्र: जे. ब्रायन पिंकनी

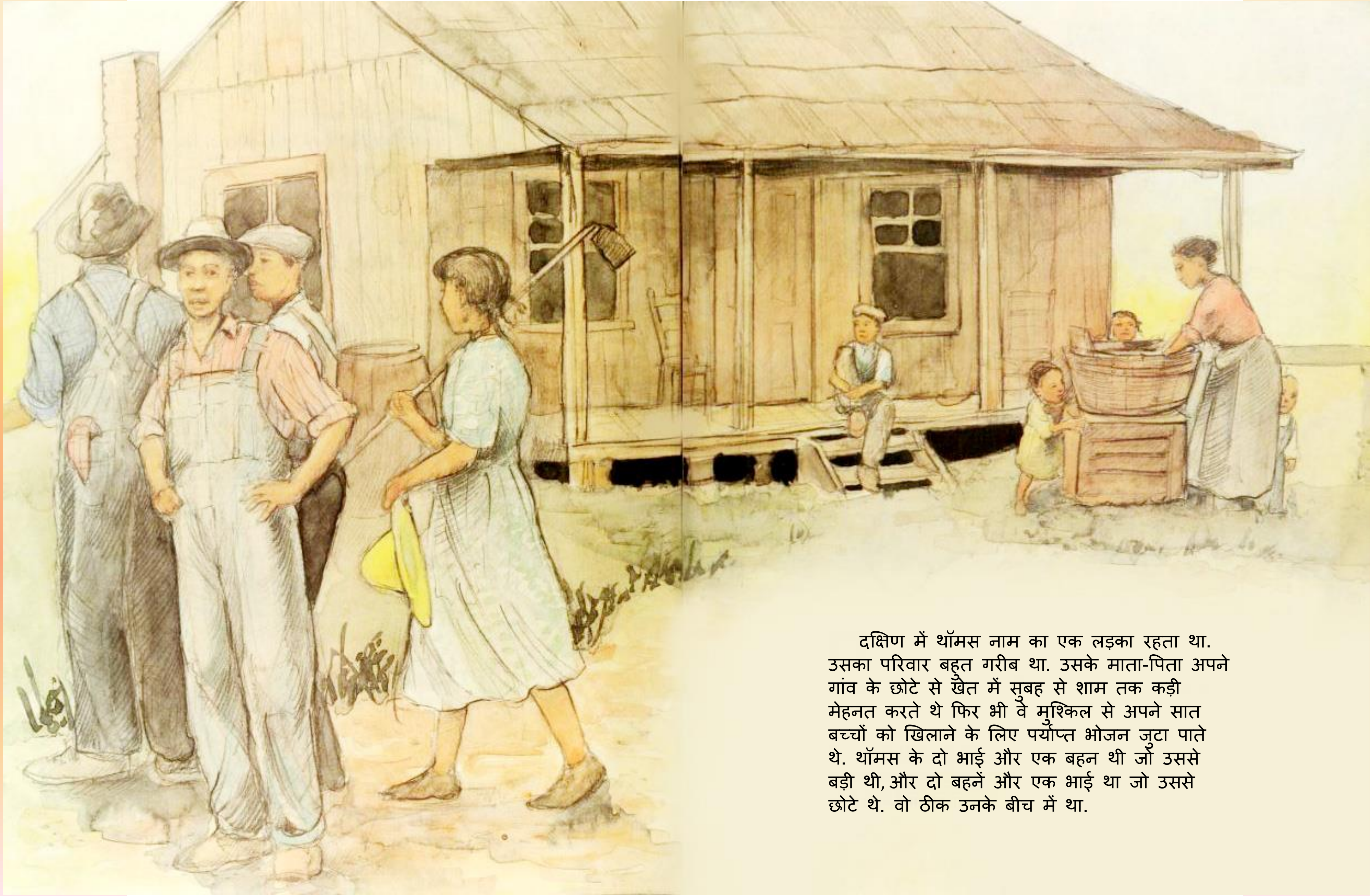


लड़का और भूत

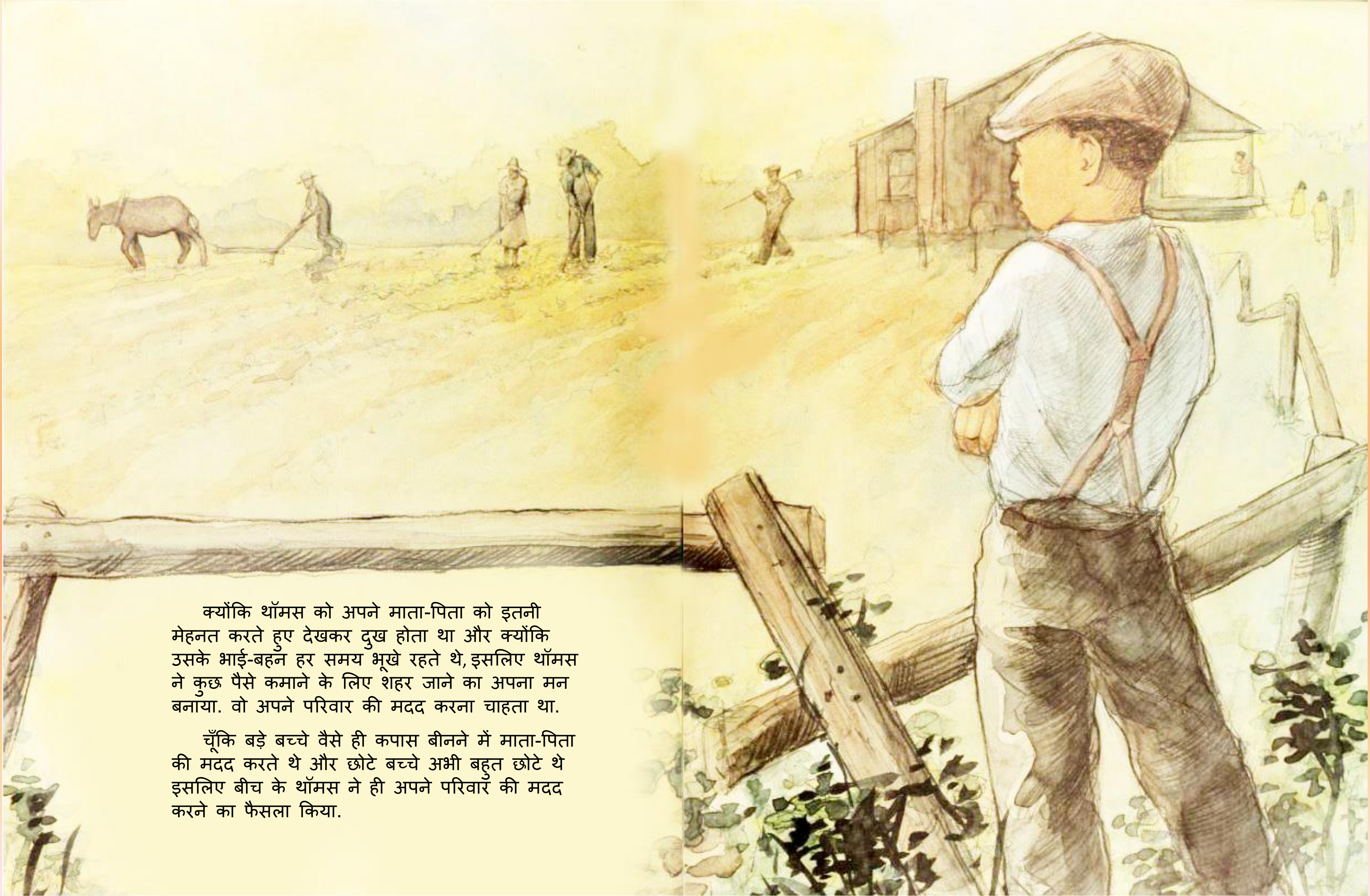


रॉबर्ट डी. सैन

चित्र: जे. ब्रायन पिंकनी

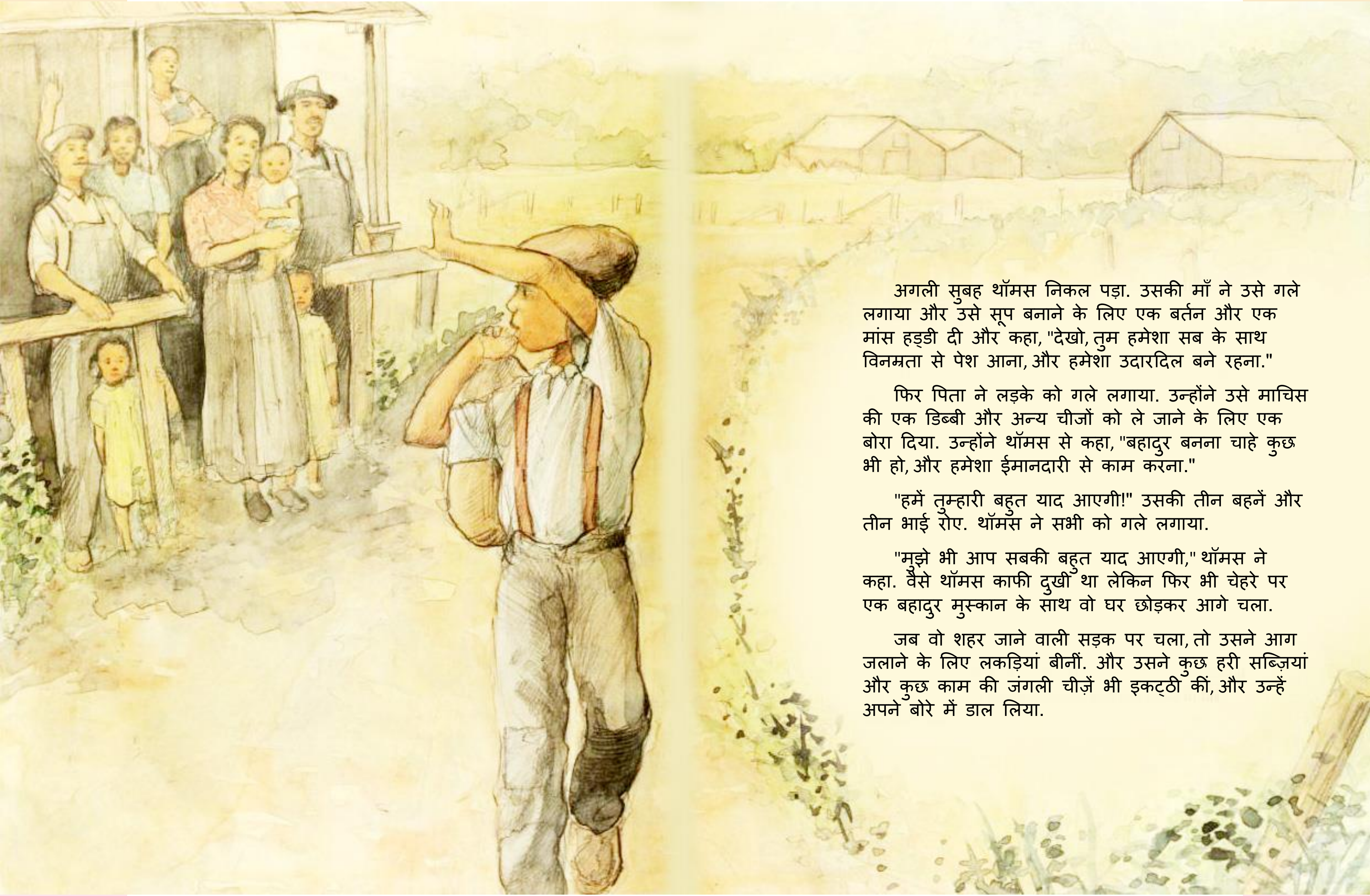


दक्षिण में थॉमस नाम का एक लड़का रहता था. उसका परिवार बहुत गरीब था. उसके माता-पिता अपने गांव के छोटे से खेत में सुबह से शाम तक कड़ी मेहनत करते थे फिर भी वे मुश्किल से अपने सात बच्चों को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन जुटा पाते थे. थॉमस के दो भाई और एक बहन थी जो उससे बड़ी थी, और दो बहनें और एक भाई था जो उससे छोटे थे. वो ठीक उनके बीच में था.



क्योंकि थॉमस को अपने माता-पिता को इतनी मेहनत करते हुए देखकर दुख होता था और क्योंकि उसके भाई-बहन हर समय भूखे रहते थे, इसलिए थॉमस ने कुछ पैसे कमाने के लिए शहर जाने का अपना मन बनाया. वो अपने परिवार की मदद करना चाहता था.

चूँकि बड़े बच्चे वैसे ही कपास बीनने में माता-पिता की मदद करते थे और छोटे बच्चे अभी बहुत छोटे थे इसलिए बीच के थॉमस ने ही अपने परिवार की मदद करने का फैसला किया.



अगली सुबह थॉमस निकल पड़ा. उसकी माँ ने उसे गले लगाया और उसे सूप बनाने के लिए एक बर्तन और एक मांस हड्डी दी और कहा, "देखो, तुम हमेशा सब के साथ विनम्रता से पेश आना, और हमेशा उदारदिल बने रहना."

फिर पिता ने लड़के को गले लगाया. उन्होंने उसे माचिस की एक डिब्बी और अन्य चीजों को ले जाने के लिए एक बोरा दिया. उन्होंने थॉमस से कहा, "बहादुर बनना चाहे कुछ भी हो, और हमेशा ईमानदारी से काम करना."

"हमें तुम्हारी बहुत याद आएगी!" उसकी तीन बहनें और तीन भाई रोए. थॉमस ने सभी को गले लगाया.

"मुझे भी आप सबकी बहुत याद आएगी," थॉमस ने कहा. वैसे थॉमस काफी दुखी था लेकिन फिर भी चेहरे पर एक बहादुर मुस्कान के साथ वो घर छोड़कर आगे चला.

जब वो शहर जाने वाली सड़क पर चला, तो उसने आग जलाने के लिए लकड़ियां बीनीं. और उसने कुछ हरी सब्ज़ियां और कुछ काम की जंगली चीज़ें भी इकट्ठी कीं, और उन्हें अपने बोरे में डाल लिया.

फिर वो खाना खाने के लिए रुका. उसने आग जलाई. वो अपने बर्तन में नदी का ताजे पानी भरकर लाया. उसने मांस की हड्डी और जो अन्य चीज़ें बर्तन मे डाल दीं. जल्द ही उसके सामने अच्छा महकदार सूप उबल रहा था.

जैसे ही वो खाने के लिए तैयार हुआ, तभी एक गरीब आदमी उसके पास आया. उसके कपड़े थॉमस से भी अधिक फटे हुए थे. उस आदमी ने पूछा, "क्या मैं उस सूप को चख सकता हूँ?"

"बिल्कुल," छोटे लड़के ने कहा. उसने फटे-पुराने आदमी को बड़ी विनम्रता से उसके टिन के प्याले को शोरबे में बार-बार डुबाने दिया. फिर दोनों ने मिलकर सूप खत्म किया. सूप बहुत स्वादिष्ट था.

भोजन ख़त्म करने के बाद उस आदमी ने पूछा, "लड़के, तुम कहाँ जा रहे हो?"

"शहर में पैसा कमाने, ताकि मैं अपने परिवार की मदद कर सकूं," थॉमस ने जवाब दिया.

"शायद तुम्हें उतनी दूर जाने की ज़रूरत न पड़े," उस आदमी ने कहा, "पर उसके लिए तुम काफी बहादुर होना पड़ेगा."





"मैंने सुना है कि यहाँ से कुछ दूर स्थित पहाड़ी पर एक घर है. वर्षों पहले वहाँ एक अमीर आदमी रहता था, लेकिन फिर वो मर गया. लोग कहते हैं कि अब उस जगह भूत-प्रेत रहते हैं. लेकिन वही लोग यह भी कहते हैं कि जो कोई भी सूर्यास्त से सूर्योदय तक उस घर में रहने का साहस करेगा उसे वो घर मिल जाएगा, और साथ में वो खजाना भी, जो बूढ़े ने मरने से पहले वहां पर छिपाया था."

"फिर आप खुद जाकर वो खजाना क्यों नहीं ले लेते?" थॉमस ने पूछा.

"सच्ची बात तो यह है कि मुझे डर लगता है. लोग कहते हैं कि हर कोई शख्स जिसने वहां रात को रहने की कोशिश की, वो या तो वहाँ से भाग गया या फिर डर के मारे मर गया. इसलिए अब कोई भी उस जगह के पास तक नहीं फटकता है."

फिर थॉमस ने अपने गरीब परिवार के बारे में सोचा.

"मैं वो जरूर करूँगा," उसने कहा. फिर उसने अपनी हड्डी और बर्तन इकट्ठे किए, और उन्हें अपने बोरे में डाला.

उसके तुरंत बाद, लड़के और आदमी ने, एक-दूसरे का साथ छोड़ दिया. सूर्यास्त से ठीक पहले, थॉमस ने पहाड़ी पर उस अकेले खड़े हुए पुराने घर को देखा.





बहादुरी से, वो ऊपर चढ़ा और एक झटके के साथ उसने दरवाजा खोला!

अंदर, अधिकांश धूल से भरे कमरे और मकड़ी के जाले थे. लेकिन, रसोईघर में उसे अलाव के सामने लोहे का एक बड़ा पुराना चूल्हा दिखा. वहां पर एक मेज-कुर्सी, एक मोमबत्ती और एक चम्मच भी था.

लड़के ने मोमबत्ती जलाई. फिर उसने अपनी अंतिम लकड़ियों से चूल्हे में आग जलाई. वो पिछले दरवाजे के बाहर जाकर कुएं में से कुछ पानी निकालकर लाया, और उसने सूप बनाने के लिए अपने बर्तन में मांस की हड्डी और बची हुई हरी सब्जियां डालीं.

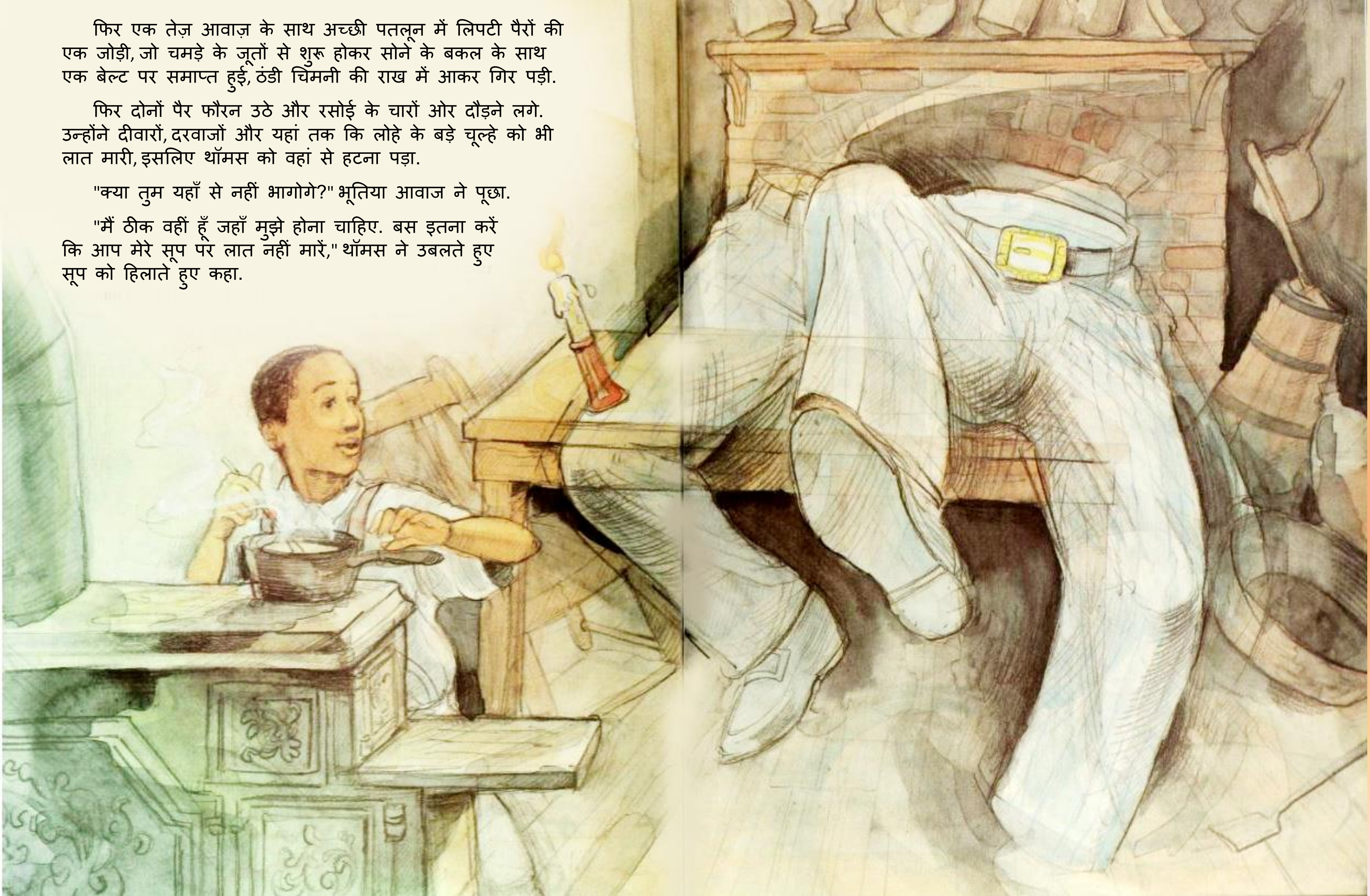
जब सूप गर्म हो रहा था, तब एक तेज रोशनी ने अचानक पूरी चिमनी को भर दिया. एक भयानक कराह आई. तभी चिमनी से एक पतली, आवाज सुनाई पड़ी, "देखो, मेरे पैर गिर रहे हैं!"

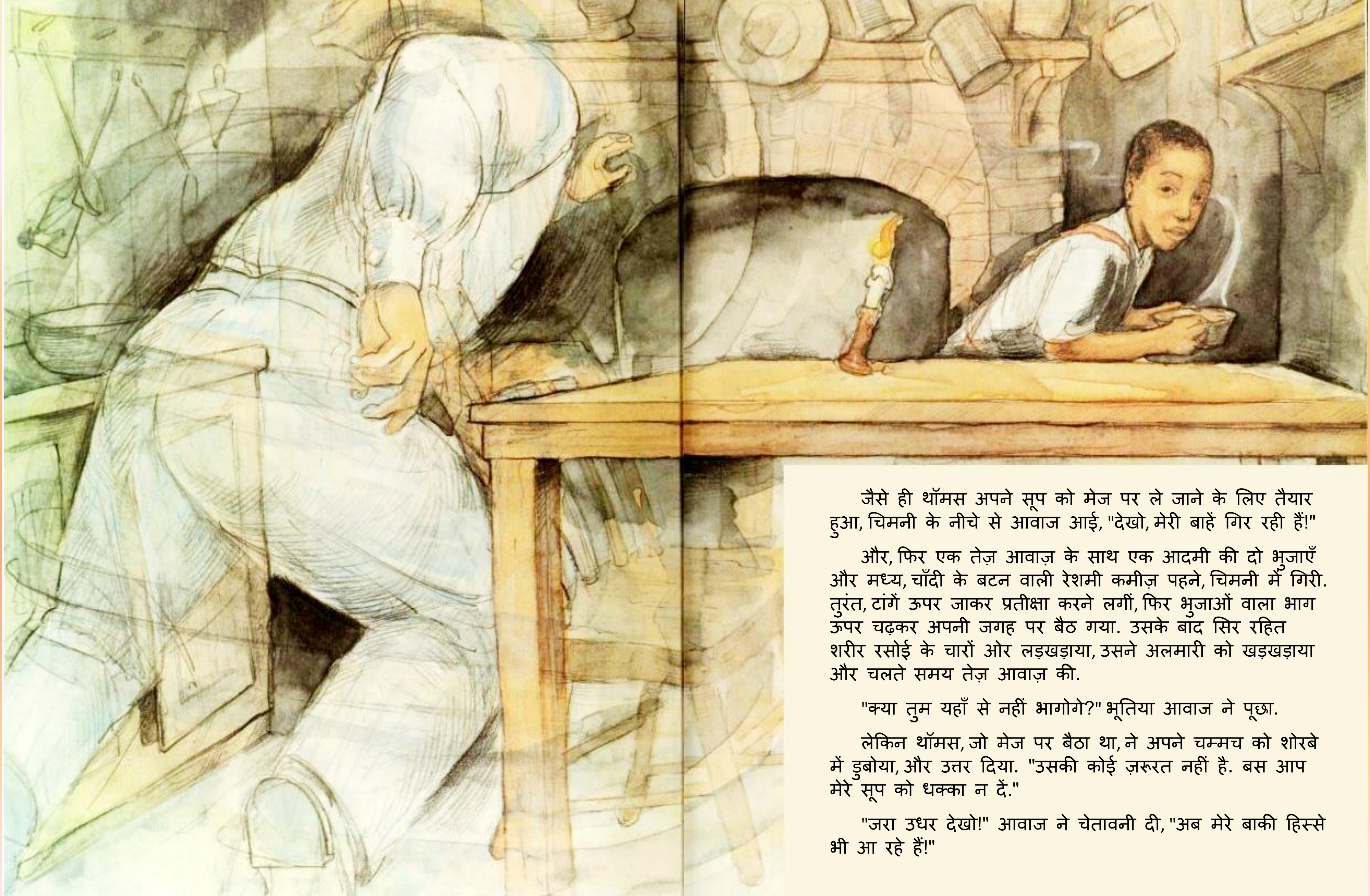
फिर एक तेज़ आवाज़ के साथ अच्छी पतलून में लिपटी पैरों की एक जोड़ी, जो चमड़े के जूतों से शुरू होकर सोने के बकल के साथ एक बेल्ट पर समाप्त हुई, ठंडी चिमनी की राख में आकर गिर पड़ी.

फिर दोनों पैर फौरन उठे और रसोई के चारों ओर दौड़ने लगे. उन्होंने दीवारों, दरवाजों और यहां तक कि लोहे के बड़े चूल्हे को भी लात मारी, इसलिए थॉमस को वहां से हटना पड़ा.

"क्या तुम यहाँ से नहीं भागोगे?" भूतिया आवाज ने पूछा.

"मैं ठीक वहीं हूँ जहाँ मुझे होना चाहिए. बस इतना करें कि आप मेरे सूप पर लात नहीं मारें," थॉमस ने उबलते हुए सूप को हिलाते हुए कहा.





जैसे ही थॉमस अपने सूप को मेज पर ले जाने के लिए तैयार हुआ, चिमनी के नीचे से आवाज आई, "देखो, मेरी बाहें गिर रही हैं!"

और, फिर एक तेज़ आवाज़ के साथ एक आदमी की दो भुजाएँ और मध्य, चाँदी के बटन वाली रेशमी कमीज़ पहने, चिमनी में गिरी. तुरंत, टांगें ऊपर जाकर प्रतीक्षा करने लगीं, फिर भुजाओं वाला भाग ऊपर चढ़कर अपनी जगह पर बैठ गया. उसके बाद सिर रहित शरीर रसोई के चारों ओर लड़खड़ाया, उसने अलमारी को खड़खड़ाया और चलते समय तेज़ आवाज़ की.

"क्या तुम यहाँ से नहीं भागोगे?" भूतिया आवाज ने पूछा.

लेकिन थॉमस, जो मेज पर बैठा था, ने अपने चम्मच को शोरबे में डुबोया, और उत्तर दिया. "उसकी कोई ज़रूरत नहीं है. बस आप मेरे सूप को धक्का न दें."

"जरा उधर देखो!" आवाज ने चेतावनी दी, "अब मेरे बाकी हिस्से भी आ रहे हैं!"



फिर एक झुलसा हुआ सिर, बालों और दाढ़ी के साथ, आग के लाल अंगारों की तरह धधकते आँखें, तेज़ आवाज़ के साथ चिमनी की राख में गिरा.

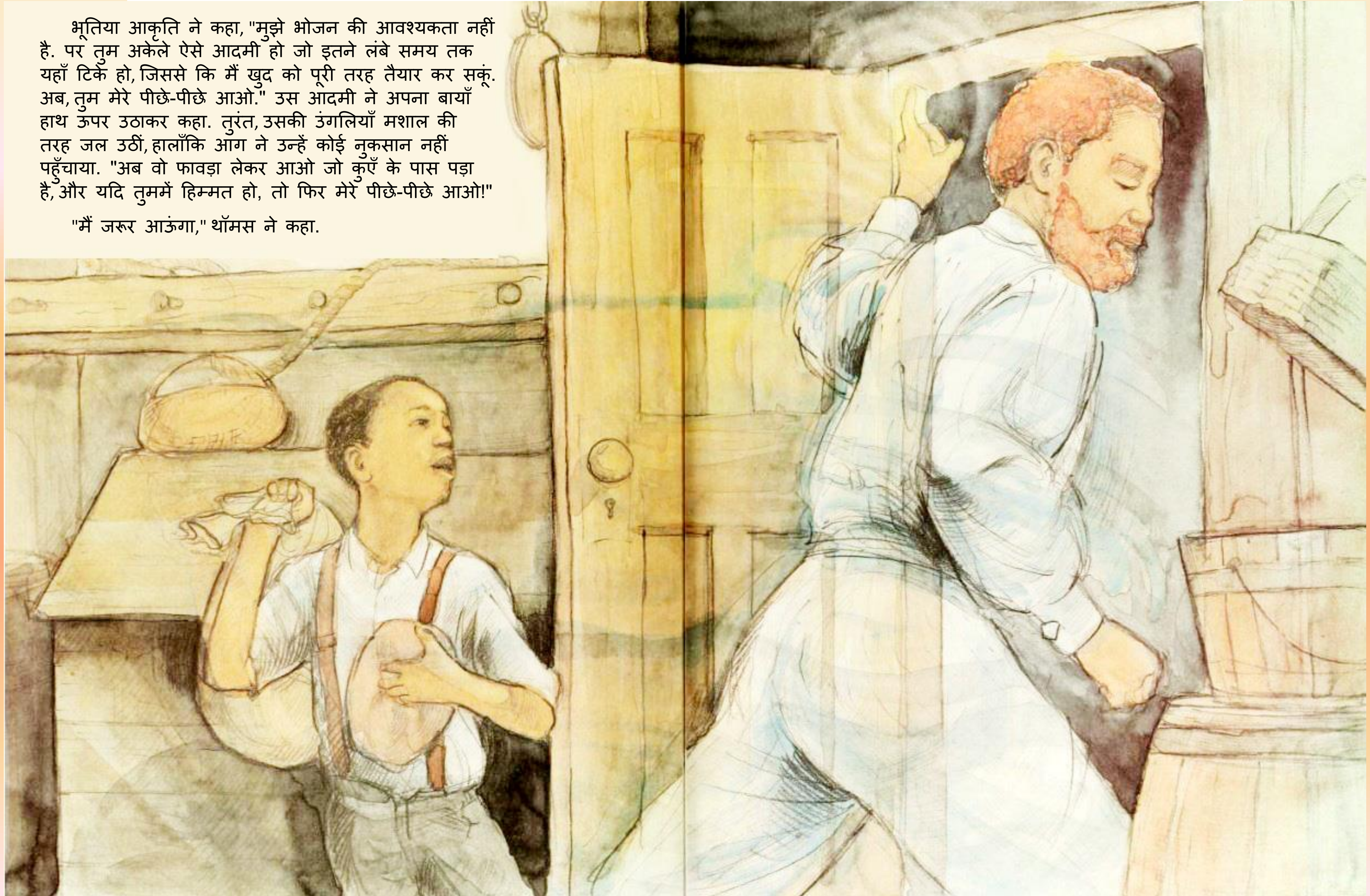
उसी समय उस आदमी का शरीर, या भूत, या वो जो कुछ भी था, उसने सिर को चूल्हे से उठाया, उसे ब्रश किया, और उसे अपने कंधों पर सीधा खड़ा कर दिया.

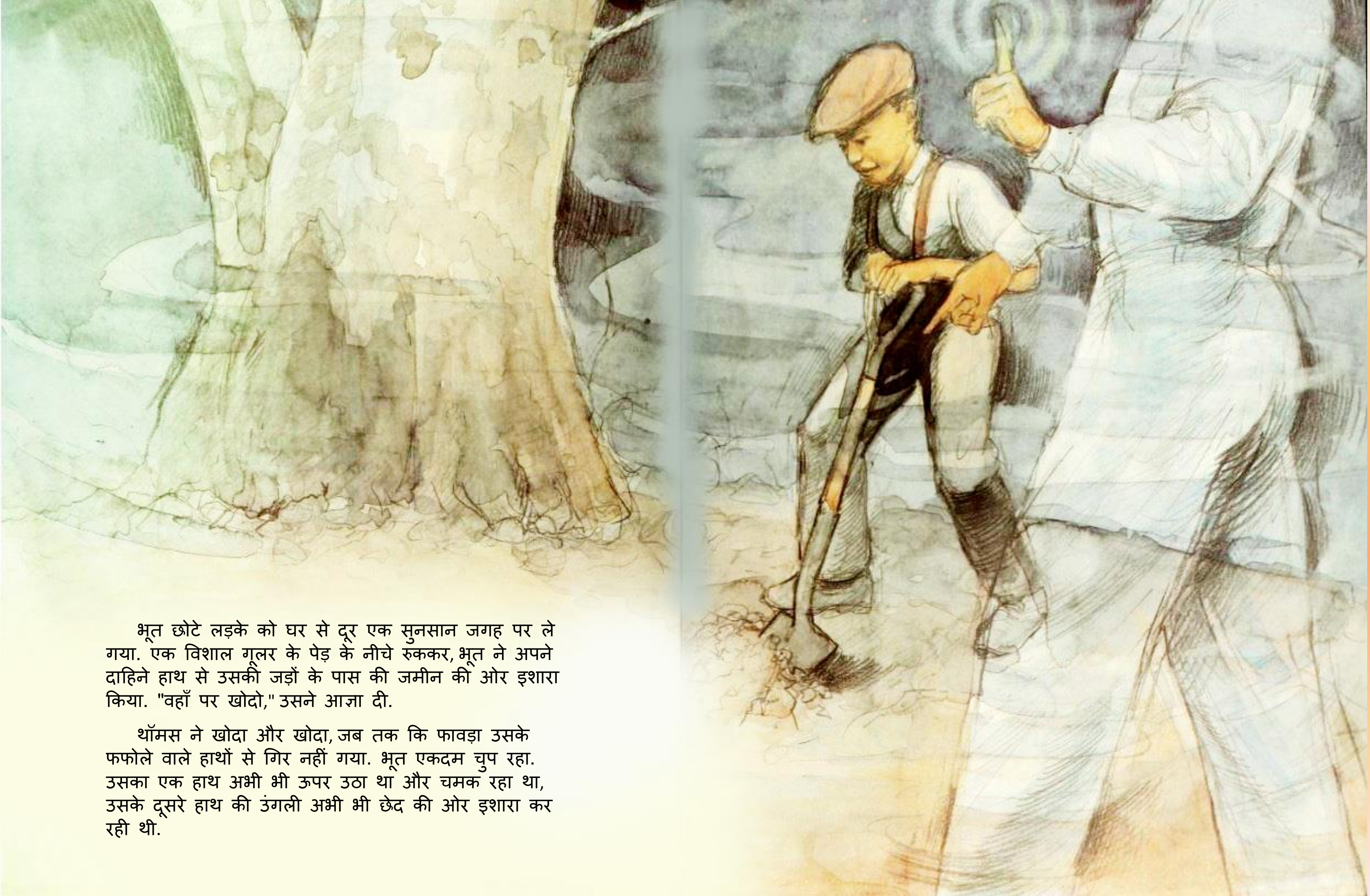
"अब," कूल्हों पर हाथ रखते हुए आकृति ने दहाड़ते हुए कहा, "अब तुम्हारा क्या कहना है?"

"क्या आप कुछ सूप पीना चाहेंगे?" थॉमस ने पूछा. वो किसी भी हालत में अपने साहस या शिष्टाचार को भूलना नहीं चाहता था. "बर्तन में अभी भी थोड़ा सा सूप बचा है, और अगर आप उसे पिएंगे तो मुझे बड़ी ख़ुशी होगी."

भूतिया आकृति ने कहा, "मुझे भोजन की आवश्यकता नहीं है. पर तुम अकेले ऐसे आदमी हो जो इतने लंबे समय तक यहाँ टिके हो, जिससे कि मैं खुद को पूरी तरह तैयार कर सकूं. अब, तुम मेरे पीछे-पीछे आओ." उस आदमी ने अपना बायाँ हाथ ऊपर उठाकर कहा. तुरंत, उसकी उंगलियाँ मशाल की तरह जल उठीं, हालाँकि आग ने उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया. "अब वो फावड़ा लेकर आओ जो कुएँ के पास पड़ा है, और यदि तुममें हिम्मत हो, तो फिर मेरे पीछे-पीछे आओ!"

"मैं जरूर आऊंगा," थॉमस ने कहा.





भूत छोटे लड़के को घर से दूर एक सुनसान जगह पर ले गया. एक विशाल गूलर के पेड़ के नीचे रुककर, भूत ने अपने दाहिने हाथ से उसकी जड़ों के पास की जमीन की ओर इशारा किया. "वहाँ पर खोदो," उसने आज्ञा दी.

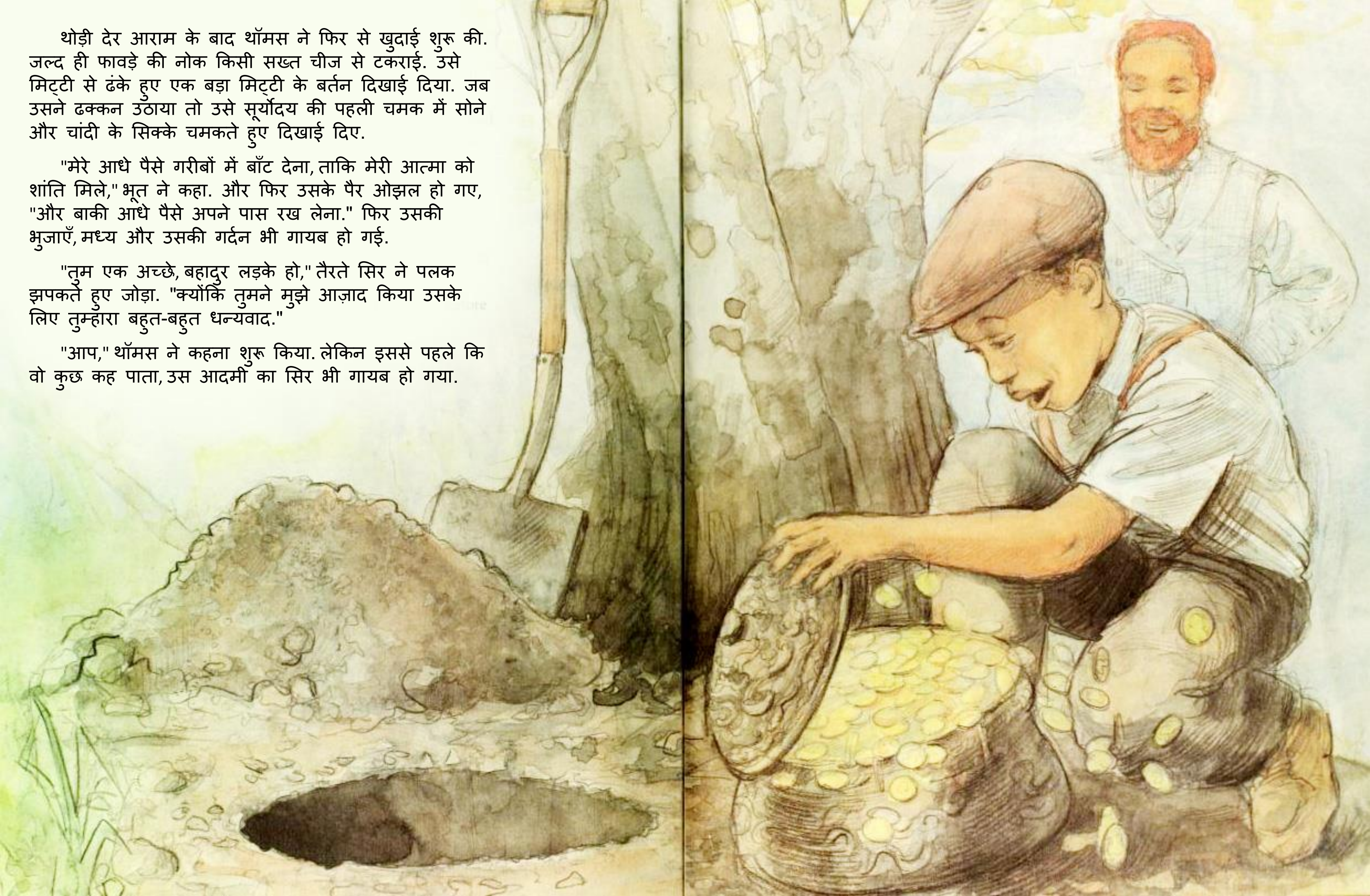
थॉमस ने खोदा और खोदा, जब तक कि फावड़ा उसके फफोले वाले हाथों से गिर नहीं गया. भूत एकदम चुप रहा. उसका एक हाथ अभी भी ऊपर उठा था और चमक रहा था, उसके दूसरे हाथ की उंगली अभी भी छेद की ओर इशारा कर रही थी.

थोड़ी देर आराम के बाद थॉमस ने फिर से खुदाई शुरू की. जल्द ही फावड़े की नोक किसी सख्त चीज से टकराई. उसे मिट्टी से ढंके हुए एक बड़ा मिट्टी के बर्तन दिखाई दिया. जब उसने ढक्कन उठाया तो उसे सूर्योदय की पहली चमक में सोने और चांदी के सिक्के चमकते हुए दिखाई दिए.

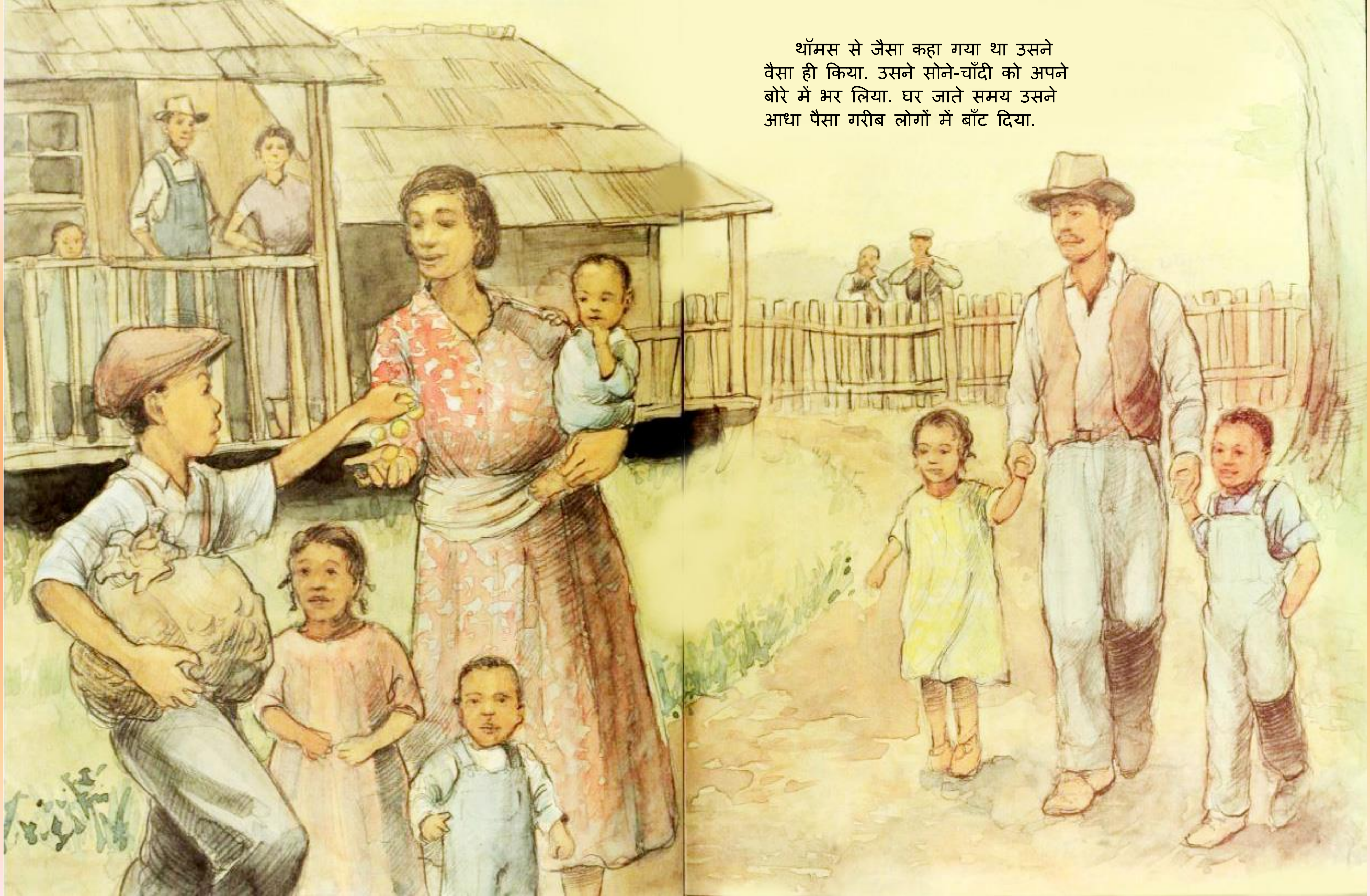
"मेरे आधे पैसे गरीबों में बाँट देना, ताकि मेरी आत्मा को शांति मिले," भूत ने कहा. और फिर उसके पैर ओझल हो गए, "और बाकी आधे पैसे अपने पास रख लेना." फिर उसकी भुजाएँ, मध्य और उसकी गर्दन भी गायब हो गई.

"तुम एक अच्छे, बहादुर लड़के हो," तैरते सिर ने पलक झपकते हुए जोड़ा. "क्योंकि तुमने मुझे आज़ाद किया उसके लिए तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद."

"आप," थॉमस ने कहना शुरू किया. लेकिन इससे पहले कि वो कुछ कह पाता, उस आदमी का सिर भी गायब हो गया.



थॉमस से जैसा कहा गया था उसने वैसा ही किया. उसने सोने-चाँदी को अपने बोरे में भर लिया. घर जाते समय उसने आधा पैसा गरीब लोगों में बाँट दिया.



जब वो घर वापस पहुंचा, तो उसका परिवार उसे सकुशल वापस पाकर बेहद खुश हुआ. फिर लड़के ने अपनी संपत्ति को अपने परिवार के बाकी लोगों के साथ साझा किया, और वे सभी पहाड़ी वाले घर में रहने चले गए और वहां खुशी-खुशी रहने लगे. उस इलाके में फिर कभी कोई भूत-प्रेत दिखाई नहीं दिया.



समाप्त